A BIBLIOGRAPHY OF ENGLISH BOOKS

1. Art of Greek Comedy - Katherine Lever Pub. Edition Ka.
2. Economic History of India under British Rule - R. C. Dutta
3. Economic Problems of Moder India - R. K. Mukherji
4. Ethics - G.E. Moor
5. French Dramatic Literature - Vol. 1.1,4 - Henry Loncaster
6. Histroy of English Drama - A. Nicoll
7. History of Medical Mediaeval French Drama - Grace Frank
8. Modern Indian Culture - D. P. Mukherjee
9. Modern Indian Political Thought - V. P. Verma
10. Modern Religious Movements in India - J. N. Farquihar
11. Modernization among Peasants - Everett M. Rogers
12. Persons & Values - Brightman
13. Social Background of Indian Nationalism - A. R. Desai
14. The British Impact on India - Sir P. Griffiths
15. Towards Non-violent Socialism - M. K. Gandai
16. The plays or Moliere - A. R. Walter
17. The Sanskrit Drama - Dr. A. B. Keith
18. The Theory of Drama - A. Nicoll, Doaba House, Delhi
19. Type of Sanskrit Drama - D. R. Mankad
20.

A Bibliography

संदर्भ ग्रंथ सूचि

क्रम	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	
1.	आधुनिक हिन्दी नाटक	गिरीश रस्तोगी	1968
2.	आधुनिक हिन्दी नाटक	डॉ. नगेन्द्र	
3.	आधुनिक हिन्दी गद्य शैली का विकास	डॉ श्याम वर्मा	
4.	आधुनिक हिन्दी नाटकों पर आंग्ल नाटकों का प्रभाव	डॉ. उपेन्द्र नारायण सिह	
5.	अपने नाटको के दायरे	मोहन राकेश	
6.	इतिहास के स्वर	डॉ. रामकुमार वर्मा	
7.	एकाकी कला	डॉ. रामकुमार वर्मा	1960
8.	एकांकी और एकांकीकार	डॉ रामचरण महेन्द्र	
9.	जयशंकर प्रसाद	आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी	
10.	नाटककार 'अश्क'	इन्द्रनाथ मदान	
11.	नाटक की परख	डॉ एस. पी. खत्री साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, द्वि सं - 1951	
12.	नाट्यकार 'अश्क'	कौशल्या 'अश्क' नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद प्र स - 1954	
13.	नाट्यकला तथा कृतियॉं	सेठ गोविन्ददास	1956
14.	नाट्यकला मीमांसा	सेठ गोविन्ददास	सं. 1935
15.	नाटककार हरिकृष्ण प्रेमी : व्यक्तित्व और कृतित्व	विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक'	
16.	नाटककार सेठ गोविन्ददास	सावित्री शुक्ल	
17.	नाटककार 'अश्क'	गोपाल कृष्ण कौल	
18	नाटककार मोहन राकेश	सं सुदरलाल कथूरिया	
19.	नाट्य समीक्षा	डॉ. दशरथ ओझा, नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली	
20.	प्रतिनिधि एकांकीकार	डॉ रामचरण महेन्द्र	1965
21.	प्रमुख एकांकीकार	डॉ रामचरण महेन्द्र	1966
22.	प्रसादोत्तर नाट्य साहित्य	डॉ. विनय बापट	
23.	प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन	जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	
24.	प्रसादजी की कला	गुलाब राय	
25.	प्रसाद के पश्चात् हिन्दी नाटक का विकास	डॉ. सावित्री खरे	
26	भारतेन्दु कालीन नाट्य साहित्य	डॉ. गोपीनाथ तिवारी हिन्दी भवन इलाहाबाद, 1959	
27.	भारतीय नाट्य शास्त्र	सं. नगेन्द्र	
28.	भारतेन्दु युग	डॉ रामविलास शर्मा	
29.	भारतेन्दु हरिश्चद्र	डॉ. रामविलास शर्मा	
30.	रेडियो नाट्य शिल्प	डॉ. सिद्धनाथ कुमार	
31.	रगमंच और नाटक की भूमिका	डॉ लक्ष्मीनारायण लाल	
32	लक्ष्मी नारायण मिश्र के नाटक	उमेश चद्र मिश्र	
33.	सेठ गोविन्ददास अभिनन्दन ग्रथ	डॉ नगेन्द्र	
34.	हिन्दी नाटक : सिद्धात और विवेचन	गिरीश रस्तोगी, ग्रथम कानपुर 1967	
35.	हिन्दी नाट्य - विमर्श	डॉ गुलाब राय	
36.	हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास	डॉ. दशरथ ओझा,	

		तृ स राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
37.	हिन्दी नाट्य-साधना	राजेन्द्रसिंह गौड
38.	हिन्दी नाटक	डॉ. बच्चनसिंह द्वि सं. - लोकभारती प्रकाशन, अहमदाबाद
<u>क्रम</u>	<u>ग्रन्थ का नाम</u>	<u>ग्रन्थकार</u>
39.	हिन्दी नाट्य साहित्य	ब्रजरत्नदास, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, प्र.स.
40.	हिन्दी नाटक पर पाश्चात्य प्रभाव	डॉ. विश्वनाथ मिश्र
41.	हिन्दी एकांकी की शिल्पविधि का विकास	डॉ. सिद्धनाथ कुमार
42.	हिन्दी नाटककार जयनाथ 'नलिन'	
43	हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन	डॉ शांतिगोपाल पुरोहित
44.	हिन्दी एकांकी और एकांकीकार	डॉ रमा सूद
45.	हिन्दी एकांकी में जीवन-मूल्य	डॉ. श्रीमती अंजु लता गौड
46.	हिन्दी के समस्या नाटक	डॉ. विनय कुमार
47.	हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन	डॉ शांतिगोपाल पुरोहित
48.	हिन्दी एकांकी का विकास और 'अश्क'	स नाटककार 'अश्क'
49.	हिन्दी में समस्या साहित्य	डॉ विमला भास्कर
50.	हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक : एक आलोचनात्मक अध्ययन	कुमारी सरला जौहरी
51.	हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास	सोमनाथ गुप्त
52.	समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच	जयदेव तनेजा
53.	साठोत्तर हिन्दी नाटक की सामाजिक चेतना	जयश्री शुक्ला

उद्धृत पत्र-पत्रिकाएँ

अमृता	-	अक्टूबर, दिसम्बर - 1995 वर्ष : 1, अंक : 1
अखंड ज्योति	-	मार्च-1998, वर्ष : 61, अंक : 3
अमृतबाजार पत्रिका	-	मार्च-1870,
आलोचना	-	जनवरी - 1966
उदय	-	मई-2001, वर्ष : 1, अंक : 18
कृतसंकल्प	-	अप्रैल-मई-17, वर्ष : 2, अंक : 2
पाथेय कण	-	अगस्त-अक्टुबर-1995, वर्ष : 8, अंक : 9,12 नवबर-1999, वर्ष : 2, अक : 14 मई-2000, वर्ष : 13, अंक : 2, 3
प्रांकुर	-	दिसम्बर-1999, वर्ष : 1, अंक : 10
मानवधर्म	-	जनवरी - 1999, वर्ष : 15, अक : 1
रैन बसेरा	-	मार्च-1996, वर्ष :3, अंक : 6
विवेक ज्योति	-	अप्रैल-2002, वर्ष : 40, अंक : 4

पंचम अध्याय

उपसंहार

Conclusion

उपसंहार

प्रस्तुत प्रबंध में शोध का महत्वपूर्ण विषय समकालीन जीवन के साथ एकांकी कितनी प्रासंगिक है, कितनी जुड़ी हुई है उसे निरुपित करने का यत्न है। मानव आज स्पुतनिक से राकेट के युग में प्रवेश कर गया है तथा वह चन्द्रलोक के यात्रियों को अपना बनाना चाहता है। ऐसी परिस्थिति में यह कैसे संभव होगा कि वह इस धरती पर रहने वाले लोगों से मेल-मिलाप न करे। सम्पर्क से जिस प्रकार नाटकों में समस्या नाटकों का श्रीगणेश हुआ। वैसे ही अपेक्षा की जा रही थी कि किसी अन्य ऐसी विधा का भी जन्म होगा जो समस्याओं को और भी अधिक समीपता से देखकर उस पर अपने विचार प्रस्तुत करे। अतः यों कहना चाहिए कि एकांकी ही निर्विवाद रुप में, सर्वान्नुमत से वह केन्द्रीय विधा बन चुकी है जिसमें समस्याओं का प्रस्तुतीकरण एवं दिग्दर्शन अधिक गहनतम, कुशलतम और समीपता के साथ चित्रित होता है। वैसे आज समस्याओं से विलग होकर न तो कोई साहित्यकार ही जीवित रह सकता है और न ही कोई कृति ही महानता का दम्भ कर सकेगी। कर भी कैसे सकती है क्योंकि जिस युग में वह या हम रह रहे हैं, समस्यायें तो उसे चारों ओर से घेरे बैठी हैं। किन्तु जिस सफलता, सजगता, कुशलता, तीक्ष्णता एवं यथार्थता के साथ एकांकीकार उन्हें चित्रित करने में सफल हुआ है उतना शायद अन्य किसी भी विधा में संभव ही नहीं है। आज एकांकी अपने कलात्मक परिदृश्य में लेखकीय नजरिये के साथ तथ्यों एवं मूल्यों का सही चित्र प्रस्तुत करती हैं। इनमें समय के परिवर्तित संदर्भो, मानव-रुपों और अवधारणाओं को सहजता से देखा-परखा जा सकता है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद हमारी जीवन-गतिविधि और पद्धति में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए। उस समय एक ओर राजनीति की विजय-शक्ति से पूरे राष्ट्र में नई चेतना का स्फुरण हो रहा था, तो दूसरी ओर अंग्रेजी शिक्षा के भौतिकवादी सुखानुभव के प्रवाह में कई संवेदनायें आहत हो रही थीं। विज्ञान के द्रुतगामी प्रसार ने मानव-मन और स्थितियों में परिवर्तन की पहल की। इससे समाज में नई वास्तविकताएँ मूल्यपद पर प्रतिष्ठित होने लगी।

आधुनिक युग में भारतीय पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ एवं संवेदनाओं में परिवर्तन हुये। विगत तीन दशकों में वैयक्तिक, बौद्धिक एवं नैतिक मूल्यों के विघटन के कारण राष्ट्रीय जिन्दगी में संकीर्णता, क्षुद्रता एवं दिशाहीनता का उन्मेष हुआ। मानव-समाज में बहुत कुछ अप्रत्याशित घटा, जिसके कारण स्वर्णिम जीवन का आकाश धूंधला गया। आज हमारे परिवार के हर पहलू, समाज की हर संस्था सम्बन्धों के बिना मूल्यहीनता का जीवन जी रही हैं। उनके बीच प्रेम, दया, श्रद्धा, परोपकार, आदर, सहिष्णुता, सहअस्तित्व आदि के भाव क्षीण होते जा रहे हैं। वात्सल्य-प्रेम, भाई-बहन के सम्बन्ध, दाम्पत्य-जीवन, वैवाहिक सम्बन्ध – सभी विछोह एवं घुटन की स्थिति से गुजर

रहे हैं। समय एवं परिस्थितियों के अनुकूल आज वैयक्तिक स्वतंत्रता की धूम में उपजे पीढ़ी-संघर्ष, नारी-जागरण, प्रेम एवं यौन-सम्बन्धों की अकुलाहट ने आदर्शों और सम्बन्धों पर प्रश्नचिन्ह लगा दिये हैं। देश में उभर रहे शोषण, रिश्वत को दुर्भावनाओं ने मूल्य-सकट की स्थिति उत्पन्न कर दी है। अर्थ-क्षेत्र में हो रहे वर्ग-संघर्ष, पूंजीवादी एवं समाजवादी संघर्ष, अर्थ-वैषम्य आदि से भारतीय जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। इतना ही नहीं, साम्प्रतकाल में बढ़ रहे अवसरवाद, दलवाद, भाई-भतीजावाद, लालफीताशाही आदि की दुर्भावनाओं से प्रशासनिक व्यवस्था एवं देशप्रेम की गरिमा संकुचित हो गई है। राजनैतिक परिसार में राष्ट्र-विकास के नाम पर भ्रष्टाचार, अराजकता तथा लक्ष्यहीनता को बढावा मिल रहा है। आज युगीन परिस्थितियों के संघात से धर्म, नैतिकता और शाश्वत आस्थाओं में गतिरोध की स्थिति उत्पन्न हो गई है, इनकी चेतना खण्डित हो गई है। जाति, मजहब एवं प्रान्तीयता के नाम पर होनेवाले साम्प्रदायिक संघर्षो के कारण भारतीय समाज का कलेवर रोगग्रस्त हो चुका है। इसके प्रत्येक स्नायु में जडता है, व्याधि है, बिखराव है। हम मर्यादाहीनता के युग में जी रहे हैं। हमारे भीतर जो अलगाव है, घुटन है, टूटन है, विवशता है, मूल्य अस्मितता की खोज और बेचैनी है, वह इसी अनास्था का परिणाम है। आज हमारे मूल्य-विघटन का कारण यही शून्यता, अनास्था और हीनता है।

हिन्दी-एकांकी में उक्त संवेदनाओं पर आधारित मूल्य-अस्मिता का रुचिकर बोध मिलता है। एकांकीकारों ने वर्तमान मानव-यथार्थ, उसके परिवेश और गतिविधि का साक्षात्कार कराया है तथा समय-सापेक्ष जीवन-बोध, गतिविधि, परम्परा और मानव-विकास के प्रति निर्णायक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। सम्पूर्ण एकांकी साहित्य मान्यताओं से जुडे विघटन एवं बदलाव के बीच नई जिजीविषा की खोज से भरा है। सम्पूर्ण एकांकी साहित्य का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि आज का एकांकीकार एक साथ ही बहुत कुछ कह देना चाहता है। जीवन की वैयक्तिक समस्याएँ और व्यापक राजनीतिक संदर्भ, एकांकियों में एक साथ ही अभिव्यक्ति पाते हैं। एकांकीकार किसी एक ही बिन्दु पर दृष्टि केन्द्रित न कर, जीवन के खण्ड-खण्ड अनुभवों को वाणी देकर समग्र परिवेश को ही जैसे दर्शकों, पाठकों के सामने साकार कर देना चाहता है। व्यक्ति के धरातल पर सेक्स और समाज के धरातल पर भ्रष्टाचार अपने व्यापक रुप में विविध कोणों से नाटकीय अभिव्यक्ति पा गये हैं। इस दृष्टि से 'अश्क' जी की 'वेश्या', 'कामदा', 'चुम्बक' आदि हैं। गणेश प्रसाद द्विवेदी जी की 'सोहागबिन्दी', भूवनेश्वर प्रसादजी की 'रोमांसःरोमांच', 'शैतान' आदि एकांकियाँ सेक्स की समस्याओं को लेकर लिखी गई हैं। भ्रष्टाचार की समस्या को इंगित करते हुए वर्मा जी की 'सही रास्ता', 'रेशमी टाई', सेठ जी की 'बंद नोट', 'धोखेबाज' आदि एकांकियाँ रचित हैं।

वस्तुतः हिन्दी एकांकी का व्यक्तित्व बहुआयामी है और शायद इसी कारण उसका सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक आदि वर्गो में वर्गीकरण बहुत संगत नहीं। एकांकीकार जो एकांकी लिखता है वह सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक और शायद विसंगत भी है। रंग नाटक होने के कारण उसकी रंगमंचीय संभावनाएँ बहुआयामी हैं - वह परंपरा से जुडे होने पर भी प्रयोगधर्मी है। इसमें परंपरा और आधुनिकता का अद्‌भुत समन्वय है। इसमें विकास के साथ जीवन की यांत्रिकता और सम्बन्धहीनता में इधर जो वृद्धि हुई है, उसके परिणामस्वरुप पारिवारिक विघटन, असंतोष, स्नेहहीनता और सम्बन्धों की भयावहता बढी है, साथ ही आर्थिक दृष्टि से स्त्रियों के आत्म-निर्भर हो जाने के कारण स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में भी बदलाव आया है। पति-पत्नी, बॉस-कर्मचारी, भाई-बहिन और प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्धों को एकांकीकारों ने नए कोण से परिभाषित किया है।

हिन्दी एकांकीकार अपने कथानक के चयन में सामान्य घटना सूत्र को पकडकर परिवेशगत विसंगतियों को उजागर करने के उद्देश्य से आम आदमी के दुःख-दर्द से जुडकर चल रहा है। हर विसंगति पर एकांकीकार तीखा प्रहार करता है। यह विसंगति चाहे दहेज के कारण सताई जाने वाली नारी की करुण व्यथा से भीगी हो अथवा राजनीतिक भेडियों के शिकार किसी आम आदमी की शोषण जनित घटना से सम्बन्धित हो। राष्ट्रीय सरोकारों से जुड़ी घटना-दुर्घटना की प्रतिध्वनी हिन्दी एकांकी में सहज देखी जा सकती है। कथ्य के धरातल पर एकांकी बहुरंगी है। समसामयिक जीवन की समस्याओं, अभावो और आम आदमी की विडम्बित स्थिति के साथ वह सत्ता के मुखौटे को भी बेनकाब करती है। व्यवस्था का नियामक आम आदमी का शोषण ही नहीं करता, वह ससार की प्रत्येक वस्तु पर भी अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है। आम आदमी की सम्पत्ति पर ही नहीं, उसकी नारी पर भी उसकी गिद्ध-दृष्टि है। किसी व्यक्ति की वस्तु को हडप कर वह उस व्यक्ति को दण्डित भी कर सकता है। सत्ता और व्यवस्था की यह दोरंगी नीति आज की एकांकी में उभरकर आई है। एकांकियों के सूक्ष्म निरीक्षण से हमें आज के राजनैतिक परिदृश्य की अनेक विद्रुपताओं एवं घटनासंकुल अवस्थाओं का बोध होता है। भ्रष्टाचार-बनाम-अराजकता और राजनैतिक लक्ष्यहीनता भारतीय जीवन-मूल्यों की इसी संवेदना से जुडे हैं।

आधुनिक एकांकी एक ओर अनास्था, एकाकीपन, अजनबीपन, भय तथा कुण्ठित मनोवृत्तियों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उसमें स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् लडे गए चीन और पाक के साथ युद्धों के परिणामस्वरुप राष्ट्रीय चेतना का प्रखर स्वर भी उभरा है। इस अवधि के एकांकियों में गौरव से शहर की ओर

पलायन की महामारी पर चिन्ता और क्षोभ के तीखे तेवर उपलब्ध हैं। एक अर्थ में इस काल के एकांकियों में जीवन की जटिलताओं, विभीषिकाओं और त्रासद परिस्थितियों का यथार्थ चित्र देखने-सुनने को मिलता है। चिन्तनशील एकांकीकार की दृष्टि युवा-जगत् में नशीली दवाओं का सेवन, काम संबंधों एवं उन्मुक्त प्रेम को उजागर करती है। शिल्प एवं प्रयोग की दृष्टि से आधुनिक एकांकी समय की धडकन के अनुरुप अपने स्वरुप के कसाव के प्रति सावधान है।

भ्रष्टाचार की अराजक परिस्थितियों के बीच हमारी आजादी की कल्पना आकाश कुसुम बन गई है। हमने पाया हमारे समक्ष एक नवीन प्रकार का वर्ग (सेठ, साहुकार, पूँजीपति, बडे किसान, तिकड़मबाज व्यक्ति, नेता और अधिकारी आदि शोषक वर्ग) अवतीर्ण हो गया है, जो अपनी महज स्वार्थपरता के कारण व्यक्ति तथा समाज को शोषित कर रहा है, प्रशासन को गुमराह बना रहा है। हिन्दी एकांकीकारों ने जीवन के राजनैतिक पक्ष के अन्तर्गत जो विभिन्न समस्याएँ उपस्थित की हैं, उनका सम्यक अध्ययन करने पर निष्कर्ष रुप में यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि उन्होंने अपने भरसक उन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है। युद्ध अथवा आक्रमण की समस्या प्राचीन काल से आधुनिक काल तक बनी हुई है और युद्ध को रोकने के लिए तथा शान्ति को प्रस्थापित करने के लिए जो-जो मार्ग सुझाए गये हैं, वे मनुष्य मात्र की लोभी प्रवृत्ति के कारण फलदायी सिद्ध नहीं हो पाये हैं। कलिंग-युद्ध जैसे प्रसंगों को लेकर एकांकीकारों ने युद्ध के भीषण परिणाम हमारे सम्मुख रखे हैं तथा उससे बचने के लिए अहिंसा का प्रचार आवश्यक बतलाया है। धर्म का प्रभाव राजनीति पर पहले जैसा था वैसा ही वर्तमान युग में है। अखण्ड भारत का विभाजन ही धर्म के नाम पर होने से स्वतंत्रता प्राप्ति के अवसर पर जैसे हिन्दू-मुसलमान संघर्ष हुए और उसके फलस्वरुप दोनों धर्मावलम्बियों को अपरिमित हानि उठानी पड़ी, वैसी ही परिस्थिति आज भी बनी हुई है। जब तक राष्ट्रीयता की भावना लोगों में निर्मित नहीं होगी, तब तक यह समस्या कदापि हल नहीं होगी।

हिन्दी-एकांकी ने नए रास्तों को अन्वेषण कर नयी भूमिकाओं को स्पर्श किया है। उसका क्षेत्र बहुरुपी, बहुरंगी और बहुआयामी हो गया है, समसामयिक परिवेश की भयावहता, राजनीतिक छल-छद्म परिवर्तित स्त्री-पुरुष-संबंध, व्यवस्था के शोषण और साधारण व्यक्ति की पीडा के साथ जीवन के प्रति निरर्थकता-बोध की अभिव्यक्ति एकांकियों में व्यापक आधार फलक पर हुई हैं। प्राचीन महानायकों के स्थान पर अपने-आपसे जूझते और परिस्थितियों से लडते हुए टूटते, पुरुषत्वहीन पात्रों का आगमन आज की युग-चेतना के अनुकूल है। आधुनिक जीवन की एकरस, उबा देने वाली निरन्तरता के बीच साधारण से ऊपर सोचने की सजगता और उससे उत्पन्न विक्षोभ, इस चले आते आवर्तन के प्रति एक विद्रोह फिर चले

आने की नियति के स्वीकार की स्थिति का यथातथ्य चित्रण एकांकियों में मिलता है।

संभवतः जीवन का एक भी संदर्भ-सूत्र हिन्दी एकांकी से अछूता नहीं है। राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के प्रायः हर प्रश्न के संदर्भ में चर्चित-अचर्चित एकांकीकारों ने एकांकी लेखन किया है। 'गाँव का सवेरा' से लेकर 'स्वर्ग का सिंहासन' तक एकांकी की कथावस्तु का विस्तार है। प्रौढ़ शिक्षा, नारी-मुक्ति, साक्षरता आन्दोलन, बंधुआ मजदूरी जैसी असंख्य राष्ट्रीय समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में अनेक एकांकी देखे जा सकते हैं। साम्प्रदायिक वैमनस्यता मिटाने तथा परस्पर सद्भाव के प्रचार-प्रसार के परिप्रेक्ष्य में भी अनेक असरदार एकांकी देखने में आये हैं। मूल्यध्वंस से आहत समाज को राहत दिलाने के उद्देश्य से भी एकांकी लिखे गये हैं। कविता और समाज के गिरते चरित्र के संदर्भ में भी एकांकीकार ने अपने एकांकियों में क्षोभ व्यक्त किया है। पर्यावरण संरक्षण जैसी महत्वपूर्ण समस्या पर भी अच्छे एकांकी लिखे गये हैं। राष्ट्रीय आत्मसम्मान और गौरव गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने के उद्देश्य से भी सशक्त एकांकी रचे गए हैं। भ्रष्टाचार और शोषण के अनेक घिनौने रुपों को भी एकांकीकारों ने बेनकाब किया है।

मानव मात्र के कल्याण के संदर्भ में लिखे गए एकांकियों में सामाजिक कुरीतियों, अनाचारों और अर्थलोलुपता पर तीखे प्रहार रेखांकित किए जा सकते हैं। आज यद्यपि अछूत समस्या बहुत बडी गंभीर समस्या भले ही न लगे, फिर भी दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में नित्य-प्रति ढहाए जाने वाले कहर आम आदमी का ध्यान अवश्य खींचते हैं। अर्थबल और बाहुबल सम्पन्न तथाकथित उच्चवर्ग के लोग निर्बलों और असहायों पर अत्याचार दिन के प्रकाश में और कभी-कभार पुलिस के साये में ढहाने में बहादुरी का एहसास करते हैं। ऐसे ही प्रसंगों पर लिखे जाने वाले एकांकियों द्वारा हर संवेदनशील व्यक्ति उद्वेलित और विचलित हो जाता है।

समसामयिक हिन्दी एकांकीकारों के सम्मुख वे सभी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक चुनौतियाँ ज्यों की त्यों उपस्थित हैं जिन्हें आजादी के बाद के एकांकीकारों ने झेला था। रामराज्य वाला कभी देखा गया स्वप्न आज भी स्वप्न ही है। रुढियों से समाज आज भी आक्रान्त है। भ्रष्टाचार का ताण्डव सिर चढकर बोल रहा है, अवसरवादी प्रवृत्ति के कलुषित साए में समूचा परिवेश घुंटन अर्थात् दमघोंटू स्थिति से गुजर रहा है, शोषण का खुले बाजार में नग्न-नृत्य हर कोई देख रहा है, स्वार्थ-परायणता के कारण प्रत्येक साहसहीनता का शिकार है, बदलते सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संदर्भो ने समूचे जीवनका समीकरण ही बदल दिया है। अतिवादी अवधारणा ने सम्बन्धों को खण्ड-खण्ड कर हवा में उडाने

का कार्य किया है। स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में भौतिकवादी संस्कृति ने गहरी दरार पैदा की है। कामवासना से तथाकथित राजनेता भी ग्रस्त हैं, ऐसी अनेक विकृतियों के मध्य हिन्दी एकांकी दिशा-बोध कर रहा है। इस प्रकार हिन्दी एकांकी दायित्वबोध के प्रति पूर्णतः सजग है, उसे वस्तुपरक बनाने के उद्देश्य से निरंतर एकांकीकारों ने मंच की अधुनातन तकनीक का उपयोग किया है। समसामयिक सामाजिक के पास विषम परिस्थितियों के घटाटोप में समय का नितान्त अभाव है, इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता है।

समसामयिक जीवन के वृहत्तर संदर्भो और सामाजिक समस्याओं को उभारने की सार्थक कोशिश जिन एकांकीकारों ने की है। उनमें लक्ष्मी नारायण मिश्र, मोहन राकेश, भुवनेश्वर प्रसाद, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, विष्णु प्रभाकर, सेठ गोविन्द दास, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' आदि हैं। हिन्दी एकांकी साहित्य में व्यंग्य वक्रता का पैनापन बढा है, साथ ही आम बोल-चाल की नाट्य भाषा की एक नई तलाश भी की गई है। हमारा आपका जीवन अपनी समस्त विसंगतियों और विकृतियों के साथ उतर आया है। एकांकीकार आज के आडम्बर, कृत्रिमतापूर्ण जीवन दिखावे से ऊब गया है। प्राचीन मान्यताओं, मूल्यों और सिद्धान्तों के विघटन के कारण - उसने नकाब उठाकर नंगे वीभत्स, घिनौने चेहरों को दिखाया है, विद्रुपताओं को अनावृत किया है, झिंझोड़ देने वाली और तिलमिला देने वाली भाषा में समाज में बिलबिलाते-कुलबुलाते कीडों से पाठक का साक्षात्कार कराया।

हिन्दी एकांकीकारों ने जिस विघटन और संकट के कुहासे को झेला है तथा पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक- सभी स्तरों पर जिस बोध को आत्मसात किया है, उस सत्य की जीवंत और सार्थक अभिव्यंजना उनकी कृतियों में मौजूद है। मूल्याभिव्यक्ति एवं तथ्यान्वेषण के द्वारा इन्होंने जीवन और जगत् को गतिविधियों के बदलाव और उसमें अन्तर्निहित सच्चाईयों की अभिव्यक्ति की है। आजादी के बाद मानव हालत की जितनी बेहतर तस्वीर हिन्दी एकांकियो में मौजूद है, उतनी किसी अन्य साहित्यिक-विधा में नहीं। यह तस्वीर अपने औदात्य में देशकाल के विषम अनुभवों की आंतरिक कुरुपताओं और परिवेश से अशांत जिन्दगी के विविध पक्षों का उद्घाटन करती है, फिर भी यह सत्य है कि पूर्ववर्ती एकांकियों की अपेक्षा नयी एकांकियों का चिंतक फलक व्यापक और प्रभावपूर्ण है। इसका कार्यक्षेत्र वास्तविकताओं के अनुसंधानों से जुडा है। इसमें मूल्य अस्मिता की खोज के बीच मानव-विकास की इतनी सहज, सघन एवं मनोरम परिस्थितियॉ चित्रित की गई हैं, जो रगीय गहराई में आधुनिक अनुभूतियो को साक्षात्कार कराने में सक्षम एवं उपयोगी प्रामाणित होती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

क्रम	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार	
1.	आधुनिक हिन्दी नाटक	गिरीश रस्तोगी	1968
2	आधुनिक हिन्दी नाटक	डॉ नगेन्द्र	
3.	आधुनिक हिन्दी गद्य शैली का विकास	डॉ. श्याम वर्मा	
4.	आधुनिक हिन्दी नाटकों पर आंग्ल नाटकों का प्रभाव	डॉ उपेन्द्र नारायण सिंह	
5.	अपने नाटकों के दायरे	मोहन राकेश	
6.	इतिहास के स्वर	डॉ. रामकुमार वर्मा	
7,	एकांकी कला	डॉ. रामकुमार वर्मा	1960
8.	एकांकी और एकांकीकार	डॉ रामचरण महेन्द्र	
9.	जयशंकर प्रसाद	आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी	
10.	नाटककार 'अश्क'	इन्द्रनाथ मदान	
11.	नाटक की परख	डॉ. एस पी. खत्री साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, द्वि सं - 1951	
12.	नाट्यकार 'अश्क'	कौशल्या 'अश्क' नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद प्र सं - 1954	
13.	नाट्यकला तथा कृतियाँ	सेठ गोविन्ददास	1956
14.	नाट्यकला मीमांसा	सेठ गोविन्ददास	सं. 1935
15.	नाटककार हरिकृष्ण प्रेमी : व्यक्तित्व और कृतित्व	विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक'	
16.	नाटककार सेठ गोविन्ददास	सावित्री शुक्ल	
17.	नाटककार 'अश्क'	गोपाल कृष्ण कौल	
18	नाटककार मोहन राकेश	सं. सुदरलाल कथूरिया	
19.	नाट्य समीक्षा	डॉ. दशरथ ओझा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	
20.	प्रतिनिधि एकांकीकार	डॉ रामचरण महेन्द्र	1965
21.	प्रमुख एकांकीकार	डॉ. रामचरण महेन्द्र	1966
22.	प्रसादोत्तर नाट्य साहित्य	डॉ विनय बापट	
23.	प्रसाद के नाटको का शास्त्रीय अध्ययन	जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	
24.	प्रसादजी की कला	गुलाब राय	
25.	प्रसाद के पश्चात् हिन्दी नाटक का विकास	डॉ सावित्री खरे	
26.	भारतेन्दु कालीन नाट्य साहित्य	डॉ. गोपीनाथ तिवारी हिन्दी भवन इलाहाबाद, 1959	
27.	भारतीय नाट्य शास्त्र	सं. नगेन्द्र	
28.	भारतेन्दु युग	डॉ. रामविलास शर्मा	
29.	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	डॉ रामविलास शर्मा	
30.	रेडियो नाट्य शिल्प	डॉ. सिद्धनाथ कुमार	
31.	रंगमच और नाटक की भूमिका	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल	
32	लक्ष्मी नारायण मिश्र के नाटक	उमेश चंद्र मिश्र	
33.	सेठ गोविन्ददास अभिनन्दन ग्रंथ	डॉ नगेन्द्र	
34.	हिन्दी नाटक : सिद्धांत और विवेचन	गिरीश रस्तोगी, ग्रंथम कानपुर 1967	
35.	हिन्दी नाट्य - विमर्श	डॉ. गुलाब राय	
36.	हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास	डॉ. दशरथ ओझा,	

		तृ सं राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
37.	हिन्दी नाट्य-साधना	राजेन्द्रसिंह गौड
38.	हिन्दी नाटक	डॉ. बच्चनसिंह द्वि. स. - लोकभारती प्रकाशन, अहमदाबाद

क्रम	ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थकार
39.	हिन्दी नाट्य साहित्य	ब्रजरत्नदास, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, प्र.सं
40.	हिन्दी नाटक पर पाश्चात्य प्रभाव	डॉ विश्वनाथ मिश्र
41.	हिन्दी एकांकी की शिल्पविधि का विकास	डॉ सिद्धनाथ कुमार
42.	हिन्दी नाटककार जयनाथ 'नलिन'	
43.	हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन	डॉ शांतिगोपाल पुरोहित
44.	हिन्दी एकांकी और एकांकीकार	डॉ. रमा सूद
45.	हिन्दी एकांकी में जीवन-मूल्य	डॉ. श्रीमती अंजु लता गौड
46.	हिन्दी के समस्या नाटक	डॉ विनय कुमार
47.	हिन्दी नाटको का विकासात्मक अध्ययन	डॉ. शांतिगोपाल पुरोहित
48.	हिन्दी एकाकी का विकास और 'अश्क'	स. नाटककार 'अश्क'
49.	हिन्दी में समस्या साहित्य	डॉ विमला भास्कर
50.	हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक : एक आलोचनात्मक अध्ययन	कुमारी सरला जौहरी
51.	हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास	सोमनाथ गुप्त
52.	समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच	जयदेव तनेजा
53.	साठोत्तर हिन्दी नाटक की सामाजिक चेतना	जयश्री शुक्ला

उद्धृत पत्र-पत्रिकाएँ

अमृता	-	अक्टूबर, दिसम्बर - 1995 वर्ष : 1, अंक : 1
अखंड ज्योति	-	मार्च-1998, वर्ष : 61, अंक : 3
अमृतबाजार पत्रिका	-	मार्च-1870,
आलोचना	-	जनवरी - 1966
उदय	-	मई-2001, वर्ष : 1, अंक : 18
कृतसंकल्प	-	अप्रैल-मई-17, वर्ष : 2, अंक : 2
पाथेय कण	-	अगस्त-अक्टुबर-1995, वर्ष : 8, अंक : 9,12 नवंबर-1999, वर्ष : 2, अक : 14 मई-2000, वर्ष : 13, अंक : 2, 3
प्रांकुर	-	दिसम्बर-1999, वर्ष : 1, अंक : 10
मानवधर्म	-	जनवरी - 1999, वर्ष : 15, अंक : 1
रैन बसेरा	-	मार्च-1996, वर्ष :3, अक : 6
विवेक ज्योति	-	अप्रैल-2002, वर्ष : 40, अंक : 4